Sahitya Samhita (साहित्य संहिता)
(*Peer Reviewed Hindi Journal*)
ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

वैदिक कालीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली

दीपक आर्य
एम्.फिल. शोधार्थी
वैदिक विभाग
ईमेल.deepakarya1824@gmail.com
साँची बौद्ध भारतीय-ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय,
साँची, रायसेन (म.प्र.)

हमारे देश में प्राचीन समय में वैदिक काल में दो प्रकार की शिक्षण प्रणाली प्रचलित थी। एक प्रकार की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी को को गुरु, आचार्य के पास जाकर ब्रह्मचर्य पालन के साथ अंतेवासी बनकर रहना पड़ता था। जैसा कि -

आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिण मिच्छते।(अथर्व.११/५/१७)

ब्रह्मचर्य के द्वारा आचार्य ब्रह्मचारी की प्राप्ति की कामना करता है।

उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भपन्तः । (अथर्व ११।५।६)

अर्थात् आचार्य उपनयन संस्कार करके ब्रह्मचारी को अपनी रक्षा में लेते हैं यह कार्य गुरुकुल ऋषि कुल विद्यापीठ आदि के रूप में शिक्षण स्थलों के रूप में चलता था इनमें ब्रह्मचारी को लोक की शिक्षा तथा ब्रह्म की शिक्षा दोनों दी जाती थी ।

जैसे - आचार्यस्ततक्ष नभसी उभे ऽ इमेऽउर्वीऽगम्भीर पृथिवीं दिवं च ।

ते रक्षति तपसा ब्रह्मचारी तस्मिन् देवाः संमनसो भवन्ति ॥ (अथर्व० ११/५/८)

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

अर्थात् अचार्य ब्रह्मचारी को ब्रह्मचारी को पृथ्वी और ध्युलोक की विद्याएँ भी पढ़ाता है । ब्रह्मचारी उन विद्याओं से पृथ्वी और ध्युलोक की रक्षा करता है। इस पृथ्वी और ध्युलोक में रहने वाले देव विद्वान् आदि तथा सृष्टि के तत्व उस ब्रह्मचारी के साथ एकमन हो जाते हैं । अर्थात् आचार्य की शरण में विद्या अध्ययन के लिए ब्रह्मचारी के रहने पर उसको समस्त विद्याओं का अभ्यास कराया जाता था, जिससे वह पृथ्वी एवं द्युलोक की रक्षा करने में समर्थ होता था,जिसका प्रमुख कारण सृष्टि के तत्वों पर उसका अधिकार विद्या एवं विज्ञान के आश्रय से होता था।

आचार्यो मृत्युर्वररुणः सोम&ओषधयः पयः ।

जीमूता&आसन्सत्वानस्तैरिदम स्वराभृतम् ॥ (अथर्व० ११/५।१४)

अर्थात् -उस ब्रह्मचारी के आचार्य मृत्यु, वरुण, सोम ,औषधियां, जल, मेष, आदि सब सहयोगी होते हैं और वह मोक्ष सुख का अधिकारी बनता है । इस प्रकार ब्रह्मचारी लौकिक एवं मोक्ष प्राप्ति की शिक्षा- अविद्या और विद्या की शिक्षा से दीक्षित किया जाता था । इस ब्रह्मचर्य की शिक्षा से लाभ का वर्णन भी प्राप्त होता है -

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत ।

इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्य: स्वराभरत् ॥ (अथर्व० ११।५।१९)

अर्थात् ब्रह्मचर्य की तपस्या से विद्वानों ने मृत्यु को पराजित किया और इंद्र ने ब्रह्मचर्य के प्रताप से स्वर्ग का राज्य लाभ प्राप्त किया ।

ब्रह्मचारी ब्रह्म भ्राजद् बिभर्ति तस्मिन् देवा अधि विश्वे समोताः ।

प्राणापानौ जनयन्नाद् व्यानं वाचं मनो हृदयं ब्रह्म मेधाम् ॥ (अथर्व० ११५।२४)

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

अर्थात् - ब्रह्मचारी ब्रह्मज्ञान से दीप्त होता है । दिव्य गुण आते हैं। प्राणापान के द्वारा ममन करता हुआ ब्रह्मज्ञान का अधिकारी बनता है।

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपोऽतिष्ठत् तप्यमानः समुद्रे ।

स स्नातो बभ्रुः पिङ्गलः पृथिव्यां बहु रोचते ।। (अथर्व ११।५।२६)

अर्थात् आचार्य रूपी विद्या के तप्यमान एवं तेजस्वी समुद्र में विद्या रूपी जल के ऊपर ब्रह्मचारी तप का अनुष्ठान करते हुए आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक शक्तियों का निर्माण करता है। इस प्रकार तप के जल से निर्मल होकर ब्रह्मज्ञान एवं तेज धारण करता हुआ,निर्भिमानी होकर पृथ्वी पर बहुत प्रकार से सबका आदरणीय होता है एवं शोभित होता है। इस प्रकार से शिक्षा का गुरु से सब विद्या और अविद्याओं का अध्ययन क्रम चलता था। इस शिक्षा क्रम में आचार्य भी ब्रह्मचारी बनकर जीवन व्यतीत करता था ।

अर्थात् सांसारिक वासनाओं पर विजय प्राप्त करके अपनी शक्ति एवं समय का विद्या - दान में उपयोग करता था। इसी प्रकार विद्यार्थी ऋषि ब्रह्मचारी नाम को ग्रहण कर पूर्ण तपस्वी, सांसारिक वृत्तियों को दमन कर ब्रह्म तेज को धारण करते हुए सृष्टि के छोटे से छोटे पदार्थ से लेकर ब्रह्म पर्यन्त अलौकिक विद्या और ब्रह्मविद्या के अध्ययन में अपनी शक्ति एवं समय का उपयोग करता था । दोनों गुरु और शिष्य का पूर्वक व्यवहार माता और पुत्र के जैसा होना चाहिए वैसा होता था।

तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे विभर्ति (अथर्व० ११।५।३)

अर्थात् उस ब्रह्मचारी को तीन रात्रि आचार्य अपने उदर में धारण करता है। अर्थात् सर्वात मना वह ब्रह्मचारी आचार्य के अच्छी ही रहता है ब्रह्मचारी अपने उस काल में औषधि, वृक्ष ,वनस्पति ,दिन-रात ऋतु वर्षा, बैल,घोड़ा, ग्रामीण तथा जंगली पशु एवं पक्षी सब में

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

ब्रह्मचारी की ही दिव्य भावना देखता है । उसको समस्त सृष्टि से ब्रह्मचर्य की प्रेरणा प्राप्त होती है।

ब्रह्मचर्य का वर्णन अथर्ववेद में अत्यधिक देखने को मिलता है कि ब्रम्हचर्य से हीं मृत्यु पर विजय प्राप्त की जाती है देवताओं ने भी ब्रह्मचर्य के माध्यम से मृत्यु को बस में कर लिया था। **ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपा.(अथर्व.११/५/१९)** ब्रह्मचर्य के माध्यम से ही इंद्र ने देवों को तेजस्वी बनाया। **तान् सर्वान् ब्रह्म रक्षति ब्रह्मचारि.... (अथर्व. ११/५/२२)**

अर्थात् ब्रह्मचारी ने ब्रह्म की शक्ति से समस्त संसार की रक्षा कर सकता है । अथर्ववेद में ब्रह्मचारी को द्युलोक और पृथ्वी को धारण करने वाला कहा गया है।

स दाधार पृथिवीम् दिवम् च. (अथर्व.११/५/१) अर्थात् ब्रह्मचर्य के संयम से ब्रहाचारी विश्व का धारक होता है।

ब्रह्मचर्य का अर्थ है ब्रह्म अर्थात वेद उत्तम जान तदनुसार आचरण करना उत्तम ज्ञान पूर्वक व्यवहार करना ब्रम्हचर्य का शाब्दिक अर्थ होता है दूसरे अर्थ में अगर कहें तो ब्रह्मचर्य व्रत का अनुष्ठान करते हुए अर्थात अपनी काम क्रोध लोभ मोह एवं अहंकार आदि वासनाओं को त्याग कर चरित्रवान बन कर विद्या का अध्ययन करना ही ब्रम्हचर्य का तात्पर्य होता है।

चरित्र निर्माण के निर्माण के लिए ब्रम्हचर्य का पालन विद्यार्थी के लिए श्रेष्ठ व उज्जवल बनाता है। परंतु आज की शिक्षा में ब्रह्मचर्य एवं चरित्र का कोई महत्व नहीं है इसलिए आज से विद्यार्थियों का कुछ भी चरित्र निर्माण नहीं होता है ब्रह्मचर्य के अभाव से निस्तेज, बलहीन, बुद्धिहीन, दुर्बल, आलसी एवं गूढ विषयों के ज्ञान को धारण करने में असमर्थ दिखतें हैं। जो ब्रम्हचर्य का पालन नहीं करता है तो वह चरित्रहीन शिक्षा से मानव का निर्माण भी नहीं कर सकता है। अपितु मानव के जीवन का तथा उसके धन स्वास्थ्य एवं समय का दुरुपयोग ही होता

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

है। परन्तु आज की शिक्षा में ब्रह्मचर्य एवं चरित्र का कोई महत्व नहीं है। इसलिए आज शिक्षा से विद्यार्थियों का कुछ भी चरित्र-निर्माण नहीं होता । वे ब्रह्मचर्य के अभाव से निस्तेज, बलहीन, बुद्धिहीन एवं गूढ विषयों के ज्ञान को ग्रहण करने में असमर्थ प्रतीत होते हैं। ब्रह्मचर्य तप का प्रतीक है । परन्तु आज के समय में विद्यार्थी तप से जीवन व्यतीत करने के स्थान पर, आराम, आलस्य, शृङ्गर, द्रव्य का अपव्यय एवं शरीर शक्तियों के भी अपव्यय को प्रधानता दे रहा है। शिक्षा के बारे में विचार करते समय आज ब्रह्मचर्य की कोई उपयोगिता जब शिक्षाशास्त्रियों को प्रतीत नहीं होती है, तब चरित्र-निर्माण हो ही नहीं सकता है ।

चरित्रहीन शिक्षा से मानव का निर्माण नहीं होता है । अपितु मानव के जीवन का तथा उसके धन, स्वास्थ्य एवं समय का दुरुपयोग ही होता है। इस संदर्भ में ब्रह्मचर्य काल में ब्रह्मचारी वेदों का अध्ययन किया करता है। आज के समय में ब्रह्म का ही अत्यधिक अस्तित्व शिक्षा के क्षेत्र में नहीं है तो परब्रह्म के शब्द ब्रह्म के अध्ययन को भी शिक्षा के क्षेत्र में स्थान प्राप्त है । आज जिनके हाथ में शिक्षा का संचालन सूत्र है उनके विचार एवं विश्वास में वेद एक ऐतिहासिक एवं साहित्यिक ग्रंथ मात्र है जिसे पूर्व समय में लोगों ने बनाया है ऐसी स्थिति में उनकी दृष्टि में ईश्वरीय ज्ञान नहीं है । अतः इनके पठन-पाठन से कोई लाभ नहीं है। वे प्राचीन समय की भाषा के विकास सभ्यता, रहन-सहन,तत्कालीन समाज एवं शासन व्यवस्था तथा कर्मकांड आदि के प्रदर्शक मात्र है और इस प्रकार से जो उनका अध्ययन करना चाहे यह अपनी लालसा की तृप्ति के लिए उसका अध्ययन करें उनका सबके लिए अध्ययन आवश्यक नहीं है और ना ही वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली में उनके प्रवेश की आवश्यकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में वेद की विषय में ऐसी भ्रांत धारणा वर्तमान समय की शिक्षा सभ्यता एवं अधूरे ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों का परिणाम है

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

उनकी यह धारणा असत्य है क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है इसका पठन-पाठन श्रवण -मनन हम सभी मनुष्यों का परम उद्देश्य है। उसके अंदर उच्च से उच्च दार्शनिक शिक्षा के विचार प्राप्त हैं। उसके अन्दर उच्च भौतिक विज्ञान भी है और आध्यात्मिक विज्ञान भी है। उसके अन्दर उच्च से उच्च शिक्षाएँ भी । वेद में समस्त विद्याओं की विद्यमानता बीज रूप से है। जिस प्रकार से गणित या विज्ञान में संक्षिप्त एवं गूढार्थ की सूत्र रूप भाषा होती है और उनका विस्तार पृथक् करना पड़ता है उसी प्रकार वेदों की भी स्थिति है। विज्ञान के फार्मूलों को यदि इतिहास के जानने वालों को हल करने को दे दिया जावे तो वह उसको रद्दी में फेंक देने योग्य समझेगा । उसी प्रकार की दशा वर्तमान समय की शिक्षा-दीक्षा से वेद के विषय में अनभिज्ञ होने के कारण हुई है। वर्तमान समय में कुछ वर्ष पूर्व तक शिक्षणालयों में शिक्षण का कार्य बालक की ६ एवं ७ वर्ष की अवस्था से किया जाता था । इस अवस्था से पूर्व की अवस्था में भी बालक की कोई शिक्षा हो सकती है, इस बात से शिक्षाशास्त्री कुछ काल पूर्व अनभिज्ञ रहते थे ।

पुनः उन्होंने अनुभव किया कि बालकों को इससे भी छोटी अवस्था से शिक्षण दिया जा सकता है और बालक की सुप्त शक्ति को जाग्रत किया जा सकता है। तदनुसार बाल-मन्दिरों के २।।-३ वर्ष के बालकों का भी शिक्षण प्रारम्भ हुआ परन्तु शिक्षाशास्त्री अभी भी अनभिज्ञ हैं । बालक बालिकाओं को शिक्षा इससे भी पूर्व दी जा सकती है और वह प्रकार हमारे देश में प्रचलित था । इस प्रकार का शिक्षण जीवन की अविकसित एवं निर्माण की अवस्था में ही दिया जाता था । इस पद्धति को संस्कार-पद्धति कहते थे । इस प्रकार संस्कार की शिक्षण-पद्धति और विद्यालयकालीन पद्धति इन दोनों का प्रचलन था ।

शिक्षा के क्षेत्र में सदाचार, चारित्र्य, सादगी, तप, संयम, ब्रह्मचर्य का पालन, बुद्धि विकास के लिए प्राणायामादि, योग का शिक्षण, ईश्वर की मान्यता आदि अनेक आवश्यक एवं आदर्श विषयों के प्रवेश एवं उनकी उपयोगिता की प्रेरणा वेदों से ही प्राप्त होगी ।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

इसके बिना जीवन अधूरा ही रहेगा। इनके बिना शिक्षा केवल वस्त्रों के बाह्य आडम्बर में लिपटी रहेगी। नये-नये फैशनों का उद्गम होता रहेगा और अन्दर-अन्दर मानवता और आत्मा अविकसित ही रह जायेंगे। हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में विदेशी शिक्षा-दीक्षा का पूर्णतया दास बना हुआ है। इसकी प्रतिभा का विकास नहीं हुआ है। इसकी प्रतिभा का विकास विद्यार्थी-जीवन को ब्रह्मचारी बना कर, योग आदि शिक्षण के द्वारा जाग्रत किया जा सकता है। तभी यह शिक्षा के क्षेत्र में विदेशियों की दासता से मुक्त होकर जगद् गुरु बनने के
मार्ग पर अग्रसर हो सकेगा।

ISSN 2454-2695
Vol 7 Issue 11
November 2021

उपसंहार

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली वेदों से आधारित है। वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है। वैदिक शिक्षा ही सबसे प्राचीन शिक्षा के रुप में मानी जाती है तथा वेदों के समकालीन होने के कारण इसे ब्राह्मण शिक्षा प्रणाली के रुप में भी मानी जाती है। वैदिक शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत ब्राह्मणों को सर्वोपरि माना गया था तथा द्विजों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। वैदिक शिक्षा गुरुकुल में पूर्ण होती थी तथा शिक्षा पूर्ण होने तक शिष्य गुरुकुल में ही गुरु के सानिध्य में अंतेवासी बनकर अपना जीवनयापन करता था।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

- **अथर्ववेद संहिता-** सम्पादक एस. पी. पण्डित बम्बई १८९५
- **अर्थर्ववेद सुबोध भाष्य -** महर्षि म. म. प. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर स्वाध्याय मण्डल, पारडी।
- **गोपथ ब्राह्मण -** सं. राजेन्द्र लाल मित्र,१९५४,आंशिक अंग्रेजी अनुवाद (१.६५) बोडबिल्स.एच. डब्ल्यु.
- **वैदिक सम्पदा –** लेखक श्री वीरसेन वेदश्रमी, प्रकाशक - विजयकुमार गोविन्दराम हासानंद, 4408,नई सड़क, दिल्ली – 110006 भारत
- **वैदिक संस्कृति –** लेखक जयदेव वेदालंकार, प्रकाशक – न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, 5824/7. न्यू चंद्रावल, शिवमंदिर के निकट, जवाहर नगर, दिल्ली- 110007
- **प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग-** ,लेखक सत्यकेतु विद्यालंकार,श्री सरस्वती सदन ए-1/32, सफरदरनजंग इंक्लेव, नई दिल्ली- 110029
- **वेद और वैदिक काल-** लेखक- गुरुदत्त, संपादक अशोक कौशिक, प्रकाशक- हिन्दी साहित्य सदन, 30- पी, कनॉट सरकस,नई दिल्ली- 110001